रिकॉर्ड :– दुखिओं पे कुछ रहम करो..... ॐ पिताश्री 27/8/60
ओम शांति। शिवबाबा बच्चों को कहते हैं कि भूले तो थे ज़रूर। प० जो चेतन है वो इस शरीर द्वारा जीवात्माओं को समझाते हैं कि बरोबर ड्रामा अनुसार तुमको भूलना ही है। भूलने कारण सब बेगाने बन गए हैं। पहले–2 तुम बहुत धर्मात्मा अर्थात् रिलीजियस थे। तुम्हारा ऊँच रिलीजन था। देवताओं सबको धर्मात्मा कहा जाता; क्योंकि वो धर्म से ही धर्मात्मा बने हैं। अब भारत इरिलीजियस है तो एकदम कंगाल है। फिर जब रिलीजियस बनते तो सॉलवेंट बनते हैं। हम अब कितने सॉलवेंट बनते हैं। हम बने तो भारत बने। हम न बने तो भारत न बने। बाप को जानने से हम रिलीजियस बने हैं। बाप को भूलने कारण इरिलीजियस बन गए थे। पारलौकिक बाप को जानकर वर्सा लेना है। बाबा आकर माया की गुलामी से छुड़ाते हैं। सारी दुनिया 5 विकारों के गुलाम हैं। अब खुदा स्वयं आए हैं। वो खुदा बाप आकर हम बच्चों को खिज़मत(ख़िदमत) सिखलाते हैं। तुम हो गए ओन गॉडली सर्विस। यह सर्विस गॉड आए सिखलाते हैं कि कैसे सबको माया के गुलाम गेरे से छुड़ाओ। खुदाई (खिज़मतगार)ख़िदमतगार तुम हो। दूसरे फिर क्रिश्चियन्स के सैलवेशन आर्मी है। वो जो भी सैलवेशन देते अथवा खिज़मत(ख़िदमत) करते सो हद की। बेहद का बाबा हमको बेहद की खिज़मत(ख़िदमत) सिखलाते हैं। तो हम ऑलमाइटी अथॉरिटी गॉडली सर्विस पर हैं। आए हैं खुद मालिक, क्रियेटर। उनको भूले हुए हैं इसलिए ही सब अधर्मी हैं। बाप आकर धर्मात्मा (रिलीजियस) बनाते हैं। जब तक बाप को न जाने तब तक वर्सा तो मिल न सके। बाबा भारत के लिए आकर वर्सा देते हैं। सदा शिव सदा सुख देते हैं। हमेशा शिव के सामने झोली लेकर खड़े रहते हैं। बम बम महादेव। अब देखो, शिवबाबा आकर यह ज्ञान की शंख ध्वनि करते हैं। फिर हम भी जब यह शंख ध्वनि करते हैं तो राजा–राणी बनते हैं। देखो, अमृतसर की बच्चियाँ कितनी अच्छी मुरली चलाते(चलाती) हैं। प्वाइंट्स धारण करती हैं। बैरिस्टर लोग भी जब कोर्ट में जाते हैं तो झट किताब पर प्वाइंट्स धारण कर जाते हैं। तुमको भी प्वाइंट्स नोट करना चाहिए। तुम भी बैरिस्टर हो ना। मायावी मनुष्य जो पाप करते रहते उन्हों को बचाना है। पापात्मा से धर्मात्मा बनाना है। तुम हो गॉडली सैलवेशन आर्मी। सैलवेज करते हो। जब स्टीम्बर(स्टीमर) डूबता है तो उनको इंजीनियर लोग सैलवेज करते हैं। भारत का बेरा(बेड़ा) अब डूबा हुआ है। कहा जाता है ना आकाश और पाताल। लंका नीचे गई और द्वारका ऊपर निकल आई। यह ड्रामा का अनादि चक्कर है। अब यह रावण पुरी नीचे जावेगी। अब इस डूबी हुई बेरी(बेड़ी) की सत्य ना० की कथा से तुम सैलवेज करते हो। इस कथा सुनाने से फिर तुमको प्रसाद देखो, कितना ऊँच मिलता है। डबल सिरताज। तो अब तुम बच्चों को सर्विस करनी है। देखो, वो लोग इतनी कॉनफ्रेंस आदि करते हैं। कौओं सदृश्य सिर्फ कां–कां करते रहते। अर्थ कोई निकलता नहीं। अब तुमको तो परमपिता प० रचयिता स्वयं आकर रचयिता और रचना की नॉलेज दे रहे हैं, जि(स)से हम सदा सुखी बनते हैं। कहते हैं आयुष्मान भव, पुत्रवान भव, सदा सुखी भव। सो भी 21 जन्मों के लिए। कोई मनुष्य कब ऐसी आशीर्वाद नहीं करेंगे। पति जो अपन को भगवान कहलाता वो भी आशीर्वाद करते हैं– धनवान भव, पुत्रवान भव। अब वास्तव में यह आशीर्वाद भगवान ही दे सकता। सो फिर मनुष्य अपन को भगवान समझ आशीर्वाद देते। हम जानते हैं आशीर्वाद के बदली वो श्राप दे देते हैं। आदि–मध्य–अंत दुःख देना यह श्राप है ना। माया श्राप देती है आदि–मध्य–अंत दुःखी भव। बाबा कहते हैं आदि–मध्य–अंत सुखी भव। वो है अमरलोक, यह है मृत्युलोक। सारी कहानी भारत पर है। दूसरा कोई धर्म वाला अमरलोक में आ नहीं सकते। तो बाबा समझा रहा था कि इस समय भारत इरिलीजियस है। जो शिवबाबा को जानते हैं वो रिलीजियस। जो नहीं जानते हैं वो इरिलीजियस। देखो, शिमले से निमंत्रण आया था 'वॉट इज़ रिलीजन?' इस पर आकर समझाओ। अब वहाँ तो अनेक धर्म वाले होंगे। हरेक अपने धर्म की महिमा करते हैं। अपन तो महिमा करते हैं उस पारलौकिक परमपिता प० की, जो आकर धर्मात्मा देवी–देवता बनाते हैं। माया फिर आकर उन देवी–देवताओं को अ(सु)र बनाती है। गॉड रिलीजियस बनाते, माया इरिलीजियस बनाती है। अंग्रेजी अक्षर बहुत अच्छे–2 क्लीयर हैं। जैसे इनकारपोरियल वर्ल्ड। यानी हम आत्माओं ..... वर्ल्ड हैं। वर्ल्ड रहने का स्थान हो गया ना। उनको कहते हैं ब्रह्माण्ड। हम अण्डे ब्रह्म में रहते हैं। अण्डा आत्मा को भी

कहते हैं। .... को भी अण्डा कहते हैं। ..... में अण्डे रहते हैं उनका नाम पर(पड़) गया ब्रह्माण्ड। ब्रह्म हो गया तत्व रहने की जगह। जैसे आकाश रहने की जगह है। आकाश के थोड़े अंश मात्र में मनुष्य सृष्टि का खेल चल रहा है। वैसे ब्रह्म महतत्व को तो बहुत ..... है। उनके अंश मात्र में हम आत्माएँ रहती हैं। वो निराकारी दुनिया, यह साकारी दुनिया। इनके लिए ही कहा जाता है वर्ल्ड हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट। साकार दुनिया का ही हिसाब–किताब कहलाते हैं ना। ऐसे नहीं कहेंगे सूक्ष्म दुनिया अथवा मूलवतन की आयु कितनी है? सृष्टि का चक्कर तो यह फिरना है ना। सूक्ष्मवतन, मूलवतन में कुछ फिरता है क्या! सूक्ष्म में तो है ही सिर्फ 3 देवताएँ और मूल में हम आत्माएँ रहती हैं। चक्कर तो यहाँ है सतयुग–त्रेता–द्वापर–कलियुग। सूक्ष्म अथवा मूलवतन में थोड़े ही सतयुग–त्रेता आदि हैं। वर्ल्ड हिस्ट्री–जॉग्राफी यहाँ ही है। सूर्यवंशी देवताएँ सतयुग में बेहद का राज्य ..... थे। फिर त्रेता में ..... सावरंटी है। हिस्ट्री–जॉग्राफी ह्युमैनिटी में ही है। स्वर्ग को कहते हैं डीटीज़्म। सूक्ष्मवतन वालों को डीटीज़्म नहीं कहेंगे। वो तो हैं ही ..... देवताएँ जिनसे स्थापना–विनाश–पालना कराते हैं। वही 33 करोड़ देवी–देवताओं का धर्म था, जिसको डीटीज़्म कहेंगे। फिर चंद्रवंशी क्षत्रीय। उन्हों को भी डीटीज़्म में ही ले जाते हैं। दूसरे धर्म में देखेंगे एक ही गुरुनानक, एक ही क्राइस्ट। यहाँ तो हम उनके वारिस बनते हैं जो फिर धर्म को पालना भी करेंगे, वारिस भी कहलायेंगे। जो ..... बनते उनको विज़ीटर कहा जाता है। तो बाबा समझाते थे रिलीजन है बाप को जानना। अब हम रिलीजियस बने हैं, बाप से बेहद का वर्सा ले रहे हैं। यह पक्का निश्चय है तो पूरा हाथ पकड़ा है। हाथ छोड़ा और लकीर लग जावेगी। अभी हम ब्राह्मण बहुत ऊँच धर्म के हैं। यह घराणा ही छोटा है। बाबा ब्राह्मण धर्म स्थापन करते हैं। 40/50 वर्ष लगते होंगे, जास्ती नहीं। बड़ा इम्तहान है तो थोड़ा टाइम लगता है। बाबा रिलीजन पर क्यों समझा रहे हैं? क्योंकि शिमले से जो विंकाश आया हुआ है उन्हों को समझाना है कि गॉड को मानने से ही हम रिलीजियस बनते हैं। रिलीजन से हम प्युअर ही रहती। प्युरिटी है तो पीस–प्रॉसपेरिटी भी मिलती है। भारत रिलीजियस था तो मालामाल था। अब इरिलीजियस है तो कंगाल है। .... जब स्पीच करते हैं तो कोई पहले लिखते हैं। तुमको भी स्पीच करनी है तो पहले अन्दर में लिखना चाहिए फिर उसको करैक्शन कर, दिल पर याद कर फिर बोलना है। प्वाइंट्स का किताब होना चाहिए। हम बाबा को भूले हुए थे। अब जाना है तो गद–2 होती है। ऐसे बाबा को अगर फिर भूला तो माया एकदम कच्चा खा जायेगी। इस असर(आसुरी) संसार में 5 अजगर बैठे हैं, एकदम कच्चा खा जाते हैं। फिर ट्रेटर बन पड़ते हैं। ट्रेटर को फिर सज़ा भी बहुत मिलती है। इसलिए तुम बच्चों के लिए वहाँ खास ट्रिबुनल बैठते हैं; क्योंकि हम–तुम बहुत बड़े बाबा के बच्चे हैं। तो बहुत बड़ा केस चलता है। हाथ लेकर और फिर जाए बाबा की निन्दा कराते हैं, तो बहुत–2 सज़ा खाते हैं। बहुत अच्छे–2 महारथी आज हैं नहीं। माया अजगर खा गई। चेम्बूर

यह अमृतसर की पार्टी भाग्यशाली है जो मम्मा के कमरे में सोती है। बच्चियाँ योगयुक्त हैं। जगदम्बा भी अच्छी योग... है, तब तो इतनी गाई–पूजी जाती है ना। दुनिया नहीं जानती कि जगदम्बा कौन है? वो लोग उनको भी देव... समझ लेते। तुम जानते हो मम्मा जगदम्बा इस समय ब्राह्मणी है, आदि देव ब्राह्मण। आदि देवी ब्राह्मणी। (अमृतसर के कृष्णलाल गोप ने बोला कि बाबा, हम बड़े दिन अमृतसर में ज़रूर ले जावेंगे) बाबा बोले– बच्चे, यह तो सब कुछ तुम बच्चों के लिए हैं। देखो, अम्बाला वाले भी यहाँ से ले गए ना। वास्तव में कामधेनू कपिलदेव शिवबाबा है, फिर साकार में यह मम्मा–बाबा है। उन... हमारी सब कामनाएँ पूरी हो जाती हैं। बाबा हमेशा कहते हैं, यह सब बच्चों का है। सन्यासी कब ऐसे नहीं कहेंगे। वो तो बड़े–2 महल आदि बनवाते हैं। तुम ब्राह्मणों का यह एक ही कुल है। इनमें गरीब भी हैं, साहुकार भी हैं। साहुकारों से फिर गरीबों की सम्भाल होती है। है तो सब बच्चों का। जो करते हैं सो अपने लिए। जितना पढ़ेगा, पवित्र बनेगा, उतना ऊँच पद पावेगा। हंस और बगुले का (इ)कट्ठा रहना भी मुश्किल हो पड़ता है। फिर जुदाई हो जाती है। वो भी बाबा हरेक की अवस्था देख फिर राय देते हैं। हरेक के लिए अपनी युक्ति है। हरेक का कर्मबन्धन अपना है। ॐ